

आशा कार्यकर्ता

आशा (मान्यता प्राप्त सामाजिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता) भारत की स्वास्थ्य सेवा प्रणाली में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, खासकर ग्रामीण और वंचित क्षेत्रों में। मातृ स्वास्थ्य, टीकाकरण और जागरूकता में उनके महत्वपूर्ण योगदान के बावजूद, इन कार्यकर्ताओं को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जो उनके प्रभाव को बाधित करती हैं।

भारत में आशा कार्यकर्ता:

- उत्पत्ति: ग्रामीण क्षेत्रों में जमीनी स्तर पर स्वास्थ्य सेवा को मजबूत करने के लिए राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन (NRHM) के तहत 2005 में शुरू किया गया।
- आशा कौन हैं: स्थानीय समुदायों की महिला स्वयंसेवक जिन्हें स्वास्थ्य जागरूकता और स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच को बढ़ावा देने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है।
- उद्देश्य: समुदायों और स्वास्थ्य सेवा प्रणाली के बीच एक कड़ी के रूप में काम करना, गाँव स्तर पर स्वास्थ्य सेवा जागरूकता और पहुँच को बढ़ावा देना।

• कार्य:

- मातृ और बाल स्वास्थ्य सेवा।
- टीकाकरण अभियान।
- स्वच्छता, सफाई और पोषण पर स्वास्थ्य शिक्षा।
- तपेदिक और परिवार नियोजन जैसे राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों के तहत सहायता।

विकासशील भारत में आशा कार्यकर्ताओं की भूमिका:

1. मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य में सुधार: संस्थागत प्रसव और प्रसवपूर्व देखभाल को बढ़ावा देने से मातृ एवं शिशु मृत्यु दर में कमी आई है।

उदाहरण: संस्थागत प्रसव दर 47% (2007) से बढ़कर 79% (2022) हो गई है।

1. टीकाकरण दरों में वृद्धि: टीकाकरण कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए समुदायों को संगठित करने से बाल टीकाकरण दरों में सुधार हुआ है।

2. रोग निगरानी: संशोधित राष्ट्रीय क्षय रोग नियंत्रण जैसे कार्यक्रमों के तहत प्रकोप की रिपोर्टिंग और शीघ्र निदान को बढ़ावा देना।

3. वकालत और व्यवहार परिवर्तन: स्वच्छता, पोषण और जीवनशैली रोगों के बारे में जागरूकता पैदा करने से सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यवहार में सुधार हुआ है।

4. स्वास्थ्य सेवा अंतराल को पाटना: ग्रामीण समुदायों और सार्वजनिक स्वास्थ्य सुविधाओं के बीच संपर्क के रूप में कार्य करना।

आशा कार्यकर्ताओं को सशक्त बनाने के लिए सरकारी पहल:

1. पारिश्रमिक और प्रोत्साहन:

2018 के बजट में वेतन और प्रदर्शन-आधारित प्रोत्साहन में वृद्धि की घोषणा की गई।

2. बीमा कवरेज: आयुष्मान भारत और प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना के तहत मुफ्त स्वास्थ्य बीमा।
3. प्रशिक्षण कार्यक्रम: राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एनएचएम) के तहत निरंतर प्रशिक्षण के माध्यम से कौशल वृद्धि।
4. मान्यता और समर्थन: बेहतर आउटरीच और फीडबैक के लिए ग्राम स्वास्थ्य मानचित्रण और डिजिटल टूल जैसे प्लेटफॉर्म।
5. बुनियादी ढाँचा विकास: सेवाओं के प्रभावी वितरण के लिए बेहतर रसद और चिकित्सा आपूर्ति तक पहुँच।

आशा कार्यकर्ताओं के सामने आने वाली चुनौतियाँ:

1. भारी कार्यभार: सीमित समर्थन के साथ कई ज़िम्मेदारियाँ उनकी कार्यकुशलता को प्रभावित करती हैं।
2. अपर्याप्त मुआवज़ा: विलंबित भुगतान और सामाजिक सुरक्षा लाभों की कमी प्रेरणा को प्रभावित करती है।
3. लिंग और जातिगत भेदभाव: आशा कार्यकर्ता, जो अक्सर हाशिए के समुदायों से आती हैं, प्रणालीगत पूर्वाग्रहों का सामना करती हैं।
4. मान्यता का अभाव: उनके प्रयासों की अपर्याप्त स्वीकृति असंतोष की ओर ले जाती है।
5. अपर्याप्त बुनियादी ढाँचा: परिवहन और चिकित्सा आपूर्ति तक सीमित पहुँच सेवा वितरण में बाधा डालती है।

आगे की राह:

1. रोजगार की स्थिति को औपचारिक बनाना: आशा कार्यकर्ताओं को स्वयंसेवी भूमिकाओं से लाभ के साथ औपचारिक रोजगार में बदलना।
2. प्रशिक्षण और संसाधनों को मजबूत बनाना: आधुनिक प्रशिक्षण प्रदान करना और आवश्यक चिकित्सा उपकरणों की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करना।
3. वित्तीय स्थिरता को बढ़ाना: प्रदर्शन बोनस के साथ समय पर और उच्च मुआवज़ा देना।
4. मान्यता कार्यक्रम: मनोबल बढ़ाने के लिए पुरस्कार और सार्वजनिक मान्यता स्थापित करना।
5. डिजिटल एकीकरण: वास्तविक समय डेटा संग्रह और संचार के लिए प्रौद्योगिकी तक पहुँच का विस्तार करना।

निष्कर्ष:

जैसा कि नेल्सन मंडेला ने एक बार कहा था, "स्वास्थ्य आय का सवाल नहीं हो सकता; यह एक मौलिक मानव अधिकार है।" आशा कार्यकर्ताओं को सशक्त बनाना न केवल एक नीतिगत प्राथमिकता है, बल्कि एक नैतिक अनिवार्यता भी है। सम्मान, संसाधनों और समर्थन के साथ उनकी भूमिकाओं को मजबूत करना यह

सुनिश्चित करेगा कि भारत की स्वास्थ्य सेवा प्रणाली अधिक समावेशी, प्रभावी और सबसे हाशिए पर पड़े लोगों की भी सेवा करने में सक्षम बने।

एक साथ चुनाव

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने चुनावों को एक साथ करने के लिए "एक राष्ट्र, एक चुनाव" को मंजूरी दी, जिससे संघवाद, लोकतंत्र और रसद पर इसके प्रभाव पर बहस छिड़ गई।

एक राष्ट्र एक चुनाव (ONOE) क्या है?

- परिभाषा: ONOE का तात्पर्य शासन को सुव्यवस्थित करने और लागत को कम करने के लिए लोकसभा, सभी राज्य विधानसभाओं और स्थानीय निकायों के लिए एक साथ चुनाव कराना है।
- ऐतिहासिक अभ्यास: भारत में 1951-1967 तक एक साथ चुनाव आयोजित किए गए थे, लेकिन विधानसभाओं और लोकसभा के समय से पहले भंग होने के कारण बाधित हो गए थे।
- दायरा: ONOE में लोकसभा और राज्य विधानसभाओं के चुनाव शामिल हैं, जिसमें नगरपालिका और पंचायत चुनाव 100 दिनों के भीतर समकालिक होते हैं।

ONOE में शामिल संवैधानिक अनुच्छेद:

- अनुच्छेद 83 और 172: लोकसभा और राज्य विधानसभाओं की अवधि से संबंधित है, जिसके लिए समकालिकता के लिए संशोधन की आवश्यकता होती है।
- अनुच्छेद 324A: एक साथ चुनाव के लिए रसद तंत्र स्थापित करने का प्रस्ताव।
- अनुच्छेद 368: स्थानीय निकायों को प्रभावित करने वाले परिवर्तनों के लिए राज्य अनुसमर्थन की आवश्यकता वाले संवैधानिक संशोधनों को नियंत्रित करता है।

ONOE की आवश्यकता:

1. कम लागत: ONOE का उद्देश्य लगातार चुनावों के उच्च वित्तीय बोझ को कम करना है।
2. शासन दक्षता: आदर्श आचार संहिता (MCC) के कारण होने वाले लंबे समय तक व्यवधान को समाप्त करता है।
3. संसाधन का विकल्प अनुकरण: सुरक्षा बलों और कर्मियों का आवश्यक कर्तव्यों से ध्यान हटाना।
4. मतदाता थकान: बार-बार होने वाले चुनावों के कारण घटते मतदाता मतदान को रोकता है।
5. विकास निरंतरता: नीतिगत पक्षाघात को कम करता है और निर्बाध शासन सुनिश्चित करता है।

रामनाथ कोविंद समिति की सिफारिशें:

1. दो-चरणीय चुनाव:
 - o चरण 1: लोकसभा और राज्य विधानसभाएँ।
 - o चरण 2: 100 दिनों के भीतर स्थानीय निकाय चुनाव।

2. नया अनुच्छेद 82A: विधानसभाओं और लोकसभा के लिए शर्तों और समन्वय तंत्र को निर्दिष्ट करता है।
3. मध्यावधि चुनाव: यह सुनिश्चित करता है कि भंग विधानसभाओं/लोकसभा के लिए नए चुनाव राष्ट्रीय चक्र के साथ संरेखित हों।
4. एकल मतदाता सूची: प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करने के लिए सभी चुनावों के लिए एक एकीकृत सूची।
5. रसद योजना: ईवीएम, वीवीपीएटी की अग्रिम खरीद और कर्मियों की तैनाती।

ONOE की चुनौतियाँ:

1. क्षेत्रीय मुद्दों पर हावी होना: राष्ट्रीय मुद्दे हावी हो सकते हैं, जिससे स्थानीय प्राथमिकताएँ दरकिनार हो सकती हैं।
2. क्षेत्रीय दलों पर प्रभाव: छोटी पार्टियाँ प्रासंगिकता खो सकती हैं, जिससे राजनीतिक विविधता प्रभावित हो सकती है।
3. संघवाद की चिंताएँ: केंद्रीकृत निर्णय लेने से राज्य की स्वायत्तता कमज़ोर हो सकती है।
4. तार्किक बाधाएँ: बुनियादी ढाँचे, संसाधनों और प्रशिक्षित कर्मियों में महत्वपूर्ण पैमाने की आवश्यकता होती है।
5. मध्यावधि विघटन: भंग विधानसभाओं को राष्ट्रीय चक्र के साथ जोड़ना जटिल है।

आगे की राह:

1. विधायी विचार-विमर्श: विस्तृत संसदीय चर्चाओं के माध्यम से सभी हितधारकों को शामिल करें।
2. आम सहमति बनाना: संघीय चिंताओं को दूर करने के लिए राज्यों और क्षेत्रीय दलों को शामिल करें।
3. पायलट परियोजनाएँ: व्यवहार्यता और चुनौतियों का आकलन करने के लिए चरणों में ONOE को लागू करें।
4. संसाधन निवेश: चुनावी बुनियादी ढाँचे को मज़बूत करें और तैयारियाँ सुनिश्चित करें।
5. जन जागरूकता: ONOE के तहत लाभों और परिवर्तनों के बारे में नागरिकों को शिक्षित करें।

निष्कर्ष:

ONOE को लागू करने के लिए एक संतुलित दृष्टिकोण आवश्यक है, लोकतांत्रिक मूल्यों, संघीय सिद्धांतों और क्षेत्रीय प्रतिनिधित्व से समझौता किए बिना लागत दक्षता सुनिश्चित करना। जैसा कि न्यायमूर्ति दीपक मिश्रा ने कहा, "किसी भी सुधार को संवैधानिक अखंडता और लोक कल्याण के साथ सामंजस्य स्थापित करना चाहिए।"

सबसे पसंदीदा राष्ट्र

स्विट्जरलैंड ने हाल ही में नेस्ले से जुड़े एक प्रतिकूल कर मामले में सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद दोहरे कराधान से बचाव समझौते की स्थिति में भारत के सबसे पसंदीदा राष्ट्र (MFN) खंड को रद्द कर दिया है।

सबसे पसंदीदा राष्ट्र (MFN) के बारे में:

- यह क्या है:

- MFN विश्व व्यापार संगठन (WTO) के तहत एक सिद्धांत है जो व्यापार नीतियों में सदस्य देशों के बीच गैर-भेदभाव को अनिवार्य करता है।

- टैरिफ, कोटा और व्यापार बाधाओं के मामले में सदस्यों के साथ समान व्यवहार किया जाता है।

- पदनाम किसके द्वारा दिया गया:

- WTO अपने 164 सदस्यों को स्वचालित रूप से MFN पदनाम प्रदान करता है।

- MFN की विशेषताएं:

- सदस्य देशों के बीच सबसे कम टैरिफ, उच्चतम आयात कोटा और न्यूनतम व्यापार बाधाओं को सुनिश्चित करता है।

- निष्पक्ष व्यापार और न्यायसंगत बाजार पहुंच को बढ़ावा देने का लक्ष्य।

- उत्पत्ति:

- द्वितीय विश्व युद्ध के बाद WTO ढांचे के तहत बहुपक्षीय व्यापार प्रणाली की आधारशिला के रूप में स्थापित।

- अपवाद:

- द्विपक्षीय या क्षेत्रीय व्यापार समझौते।

- विकासशील देशों के लिए विशेष पहुंच।

- ईरान या उत्तर कोरिया जैसे गैर-WTO देश इन नियमों से बंधे नहीं हैं।

- MFN को हटाना:

- MFN स्थिति को निलंबित करने के लिए कोई औपचारिक WTO प्रक्रिया मौजूद नहीं है।

- MFN उपचार को हटाने समय सदस्यों को WTO को सूचित करने की बाध्यता नहीं है।

- हालिया विकास:

- 1 जनवरी, 2025 से प्रभावी, भारतीय कंपनियों को स्विट्जरलैंड में आय पर 10% कर कटौती का सामना करना पड़ेगा।

अफ्रीकी स्वाइन बुखार

अफ्रीकी स्वाइन बुखार (ASF), सूअरों को प्रभावित करने वाली एक अत्यधिक संक्रामक बीमारी, केरल के कोट्टायम जिले में फैलने की सूचना मिली है। अधिकारियों ने बीमारी के प्रसार को रोकने के लिए पशुओं को मारने के उपाय शुरू किए हैं और संक्रमित क्षेत्र घोषित किए हैं।

अफ्रीकी स्वाइन फीवर (ASF) के बारे में:

- उत्पत्ति:

- ASF उप-सहारा अफ्रीका में स्थानिक है, लेकिन एशिया और यूरोप जैसे क्षेत्रों में वैश्विक रूप से फैल गया है।

- वेक्टर:

- संक्रमित जानवरों, दूषित कपड़ों, वाहनों या संक्रामक नरम टिक्स के काटने से सीधे संपर्क के माध्यम से फैलता है।

- फैलने का तरीका:

- संक्रमित सूअरों या पोर्क उत्पादों के साथ सीधा संपर्क।

- दूषित सतहों और उपकरणों के माध्यम से अप्रत्यक्ष संपर्क।

- रोग पाया जाता है:

- विशेष रूप से घरेलू और जंगली सूअरों को प्रभावित करता है।

- जूनोटिक या नहीं:

- ASF जूनोटिक नहीं है; यह मानव स्वास्थ्य के लिए कोई खतरा नहीं है।

- लक्षण:

- बुखार, भूख न लगना, आंखों की झिल्लियों में सूजन, लाल त्वचा, दस्त और उल्टी।

- इलाज:

- कोई टीका या इलाज उपलब्ध नहीं है। संक्रमित सूअरों को मारना ही रोकथाम का एकमात्र प्रभावी उपाय है।

कृत्रिम सूर्य ग्रहण

यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी ने सटीक संरचना उड़ान का उपयोग करके विस्तारित सूर्य कोरोना अध्ययन के लिए कृत्रिम सूर्य ग्रहण बनाने के लिए भारत से प्रोबा-3 लॉन्च किया।

कृत्रिम सूर्य ग्रहण क्या है?

- परिभाषा: एक कृत्रिम सूर्य ग्रहण प्राकृतिक घटना की नकल करता है जहां चंद्रमा सूर्य के प्रकाश को अवरुद्ध करता है, जिससे सूर्य के कोरोना का विस्तृत अवलोकन संभव हो पाता है।
- निर्माता: दो उपग्रह सूर्य के प्रकाश को अवरुद्ध करने के लिए संरेखित होते हैं, जिससे वैज्ञानिक अध्ययन के लिए एक नियंत्रित छाया बनती है।
- उद्देश्य: सूर्य के कोरोना का निरीक्षण करना और ऐसी घटनाओं का अध्ययन करना जैसे कि यह सूर्य की सतह से अधिक गर्म क्यों है।

कृत्रिम सूर्य ग्रहण कैसे काम करता है

- उपग्रह जोड़ी: दो उपग्रह - कोरोनाग्राफ स्पेसक्राफ्ट (CSC) और ऑकल्टर (OSC) - ग्रहण का अनुकरण करने के लिए सटीक संरेखण बनाए रखते हैं।
- छाया निर्माण: ऑकल्टर अंतरिक्ष यान कोरोनाग्राफ अंतरिक्ष यान पर छाया डालता है, जो प्राकृतिक ग्रहण में चंद्रमा की भूमिका की नकल करता है।
- परिशुद्धता: मिलीमीटर-स्तर की सटीकता प्रति कक्षा छह घंटे तक लगातार ग्रहण सुनिश्चित करती है।

कृत्रिम सूर्य ग्रहण का महत्व

- विस्तारित अवलोकन: प्राकृतिक ग्रहणों के विपरीत, जो केवल कुछ मिनटों तक चलते हैं, सूर्य के कोरोना का घंटों तक अध्ययन करने में सक्षम बनाता है।
- अंतरिक्ष मौसम की भविष्यवाणी: भू-चुंबकीय तूफानों की भविष्यवाणी करने और उपग्रहों और पृथ्वी-आधारित प्रणालियों में व्यवधान को कम करने में मदद करता है।
- वैज्ञानिक अंतर्दृष्टि: कोरोना के रहस्यों को उजागर करता है, जिसमें तापमान विसंगति और सौर ज्वालाएँ शामिल हैं।

प्रिसाइज़ फ़ॉर्मेशन फ़्लाइंग (PFF) तकनीक क्या है? • परिभाषा: एक ऐसी तकनीक जो उपग्रहों को कक्षा में एक दूसरे के सापेक्ष सटीक स्थिति और अभिविन्यास बनाए रखने में सक्षम बनाती है।

- तंत्र: संरेखण के लिए GPS, अंतर-उपग्रह रेडियो लिंक और स्वचालित नियंत्रण प्रणाली का उपयोग करता है।

- प्रोवा-3 में कार्यान्वयन: उपग्रह 150 मीटर की दूरी पर रहते हैं, ग्रहण का अनुकरण करने के लिए मिलीमीटर-स्तर की सटीकता बनाए रखते हैं।

- लाभ: मिशन की सटीकता को बढ़ाता है और उन्नत अवलोकन तकनीकों के लिए एक मंच प्रदान करता है।

बृहस्पति चंद्रमा

नासा के जूनो मिशन ने बृहस्पति के ज्वालामुखी चंद्रमा आयो के बारे में नई जानकारी दी है, जिससे इसकी अत्यधिक गतिविधि और ज्वारीय तापन के बारे में रहस्य सुलझ गए हैं।

आयो चंद्रमा के बारे में:

• यह क्या है:

आयो बृहस्पति का तीसरा सबसे बड़ा चंद्रमा है, जो पृथ्वी के चंद्रमा के आकार का है, जो 400 से अधिक सक्रिय ज्वालामुखियों के लिए जाना जाता है, जो इसे सौर मंडल में सबसे अधिक ज्वालामुखी सक्रिय पिंड बनाता है।

• ज्वालामुखीय गतिविधि अधिक क्यों है:

o बृहस्पति के चारों ओर आयो की अण्डाकार कक्षा ज्वारीय लचीलापन पैदा करती है, जिससे चंद्रमा के अंदर अत्यधिक गर्मी पैदा होती है।

o यह गर्मी आयो के अंदरूनी भाग को पिघला देती है, जिससे इसके ज्वालामुखी विस्फोट और लावा प्रवाह को बढ़ावा मिलता है।

o वैश्विक मैग्मा महासागर के बजाय अलग-अलग मैग्मा कक्ष गतिविधि को संचालित करते हैं।

• महत्व:

o आयो ज्वारीय तापन के बारे में जानकारी प्रदान करता है, जो यूरोपा और एनसेलडस जैसे अन्य खगोलीय पिंडों के बारे में सिद्धांतों को प्रभावित करता है।

o आयो की ज्वालामुखी गतिविधि का अध्ययन चरम भूगर्भीय स्थितियों वाले एक्सोप्लैनेट और सुपर-अर्थ को समझने में मदद करता है।

• बृहस्पति के चंद्रमा: बृहस्पति के 95 पुष्ट चंद्रमा हैं, जिनमें सबसे प्रसिद्ध गैलीलियन चंद्रमा हैं - आयो, यूरोपा, गैनीमेड और कैलिस्टो। आयो इन चंद्रमाओं में सबसे भीतरी है, जिसकी सतह इसकी तीव्र ज्वालामुखी गतिविधि द्वारा आकार लेती है।

मालवा नहर

पंजाब में मालवा नहर परियोजना का उद्देश्य दक्षिणी क्षेत्रों में सिंचाई में सुधार करना है, लेकिन वन भूमि पर पड़ने वाले प्रभावों के कारण पर्यावरण संबंधी चिंताएँ भी हैं।

मालवा नहर परियोजना के बारे में:

• शामिल राज्य: पंजाब और राजस्थान।

• नदी का स्रोत: फ़िरोज़पुर जिले में हरिके हेडवर्क्स पर सतलुज नदी से निकलती है।

• लंबाई और गहराई: नहर 149.53 किलोमीटर तक फैली है और 12 फीट गहरी है।

- उद्देश्य: दक्षिणी पंजाब में लगभग 2 लाख एकड़ कृषि भूमि की सिंचाई के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- महत्व:
-
- दक्षिणी पंजाब में पानी की कमी को कम करता है।
- राजस्थान और हरियाणा को आवंटन बनाए रखते हुए पंजाब के भीतर समान जल वितरण प्रदान करता है।
- कृषि उत्पादकता को बढ़ाता है और सूखाग्रस्त क्षेत्रों को संबोधित करता है।a